Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

"विंध्य प्रदेश में पर्यटन के विकास की संभावनाएं"

नरेन्द्र चौधरी

पीएचडी, नेट, संजय गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

डॉ.के.एस नेताम

प्राध्यापक –विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, संजय गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

सारांशः–

विंध्य प्रदेश क्षेत्र में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं, प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थल व इको–टूरिज्म के कारण। सरकारी निवेश व योजनाओं से यह अंतरराष्ट्रीय पर्यटन हब बन सकता है। पर्यटन विकास, विरासत और सांस्कृतिक संरचनाएं एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। विरासत पर्यटन, पर्यटन की एक शाखा है जो किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पर्यावरणीय विरासत की खोज और प्रशंसा पर केंद्रित है। पर्यटन विकास का महत्व आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अत्यधिक है। यह रोजगार सृजन करता है, स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है, और बुनियादी ढांचे के विकास में सहायता करता है। इसके अलावा, पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों और जीवन शैलियों के बीच समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे सामाजिक सामंजस्य और सांस्कृतिक संरक्षण संभव होता है। पर्यावरण संरक्षण और स्थायी विकास में भी पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, यदि इसे जिम्मेदारी से नियोजित और प्रबंधित किया जाए।
पर्यटन के क्षेत्र में जैसे–जैसे विस्तार होता जायेगा, वैसे ही यहां के लोगों को अधिकाधिक रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा क्षेत्र का आर्थिक विकास भी होगा। इस प्रकार रीवा जिले में पर्यटन व्यवसाय की अपार संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं, जो कि यहाँ के बेरोजगार लोगों को स्वरोजगार के अपार अवसर प्रदान करेंगे।

बीज शब्द : पर्यटन व्यवसाय, रोजगार, पर्यटक, विदेशी मुद्रा आदि।

अवधारणात्मक परिचय :

रीवा के आस–पास के क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये गोविंदगढ़, देवतालाब, रीवा किला, प्रकृति की गोद में बसाः पपरा, खंधो, वाणसागर, गोरगीरू विध्यांचल का रोम, रेहुता का किला, इटहाः मौर्यकाल का महत्वपूर्ण नगर, गुढ़ का कष्टहरनाथ का मंदिर, भैरव बाबा का मंदिर, बहंगी ऋषि की तपस्थली देवतालाब, देअर–कोठार, बसामन मामा, क्योटी जलप्रपात, बहुटी जलप्रपात, चचाई जलप्रपात, पूर्वा जलप्रपात, छोटा चित्रकूट आदि हैं जो कि पर्यटन व्यवसाय की अपार संभावनाओं को विदेशी व्यवसाय को बढ़ावा लिये हुए हैं जहाँ कि विदेशियों के आने की अपार संभावनाएँ हैं, साथ देने के लिये ये प्रमुख स्थल हैं जहाँ कि पर्यटन व्यवसाय को विकसित किया जा सकता है। विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिये पर्यटन व्यवसाय सबसे अच्छा माध्यम है क्योंकि रीवा जिले में पर्यटन व्यवसाय की अपार संभावनाएँ हैं यह विश्व में पर्यटन व्यवसाय के प्रमुख केन्द्रों के रूप में विकसित किया जा सकता है।

पर्यटन उद्‌गम एवं विकास :–

अतीत को जानना, उसके बारे में जिज्ञासा रखना मनुष्य की स्वभावगत प्रवृत्ति रही है। हम यो भी कह सकते हैं कि अतीत को जाने बिना भविष्य की राह का समुचित निर्धारण नहीं किया जा सकता. इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि घर से बाहर निकलने के विचार ने ही यात्रा को जन्म दिया और इसी से आधुनिक पर्यटन का विकास हुआ भ्रमण या पर्यटन का इतिहास जितना पुराना रहा है उतना ही रोमांचक और रोचक भी घूमने–फिरने की किया सभ्यता के विकास से जुड़ी रही है। सभ्यता के विकास को भ्रमण या यात्रा से पृथक नहीं किया जा सकता फर्क इतना है कि सभ्यता का इतिहास शासक वर्ग से अधिक जुड़ा रहा है। यात्रा का इतिहास आम जनता का इतिहास है। इस इतिहास की कहानी हम सब की कहानी है। यात्रा की गाथा में साहस, जिज्ञासा, आनंद की खोज, अध्यात्म, व्यवसाय आदि के अनेक रोचक वृतांत समाएँ हुए हैं। कोलंबस ने साहसिक यात्रा के जरिए अमेरिका की खोज कर ली तो बास्काडीगामा ने भारत को खोज निकाला। हवेनसांग, फाह्यान, मंगस्थनीज आदि ने दुर्गम राहें तय करते हुए भारत आकर बौद्ध दर्शन समेत अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया इस प्रकार से पर्यटन शब्द का उद्‌गम हुआ।

पर्यटन विकास :–

पर्यटन, पर्यटकों को भौतिकता के भागम–भाग से दूर प्राकृतिक स्थलों एवं प्रदूषण रहित सुरम्य स्थलों में शांति व सुकून देने वाला है। पर्यटन प्राकृतिक स्थलों के आनन्द एवं मानसिक सुख शांति तो प्रदान ही करता है साथ ही वन ग्रामों की आदिम संस्कृति, हस्तशिल्प, दस्तकारी, लोकरंजन, हथकरघा, दूर–दूर तक फैले खेत–खलिहान और उनमें गूँजती स्वरलहरियों का भान कराता हैं । इन स्थलों को नजदीक से देखने, महसूस करने तथा अवकाश के कुछ क्षण व्यतीत करने के लिए पर्यटन की अवधारणा ने जन्म लिया है और अब हालात यह है कि पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन का बड़ा स्रोत बन गया है। पर्यटक अब प्रचलित पर्यटन स्थलों की भीड़ से बचने के लिए पर्यटन केन्द्रों मे ही जाना अधिक पसन्द करते हैं। पर्यटन मंत्रालय ने इसे दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन विकास को प्राथमिकता में रखते हुए राज्यों को विशेष वित्तीय सहायता के प्रावधान किया है।

पर्यटन के विकास से देश में विकास के विविध आयाम पनपते हैं। पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें हर देश की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास की गतिविधियाँ जुड़ी हैं। अतः पर्यटन के सतत विकास होने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विकास होना आवश्यक है। पर्यटन विकास से जहाँ एक ओर देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है वहीं दूसरी तरफ पिछड़े क्षेत्रों का विकास, लोक संस्कृति का संरक्षण, विरासत की हिफाजत, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, पर्यावरणीय संवर्धन एवं नये–नये विकास के आयाम बनते हैं । इस तरह पर्यटन उद्योग अनेक संभावनाओं से जुड़ा एक प्रमुख उद्योग है।

पर्यटन केन्द्रों के विकास की अवधारणा–

पर्यावरणीय पर्यटन विकास का आधार एवं आकार किसी भी क्षेत्र विशेष की प्रगति एवं विकास का दर्पण है।श क्षेत्र के सुव्यवस्थित आधारभूत संरचना के पूर्ण उपयोग में पर्यटन विकास एवं मार्केटिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यटन विकास का मूल उद्देश्य एवं विदेशी पर्यटन के क्षेत्र में संवर्धनात्मक कार्य के अलावा पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं के सुनिश्चित विकास में सहायता प्रदान करना है। साथ ही पर्यटन सूचना का प्रसार, पर्यटन सुविधाओं का विकास, पर्यटन सम्बन्धी आवास सुविधाएँ, यात्रा अभिकर्ताओं, परिवहन प्रचालकों, वन्यजीवन, साज–सामान, स्मारकों, पर्यटक गाइडों आदि जैसे विभिन्न संघटकों के कार्यकलापों का विनियमन भी इसी क्रिया से सम्मिलित किए जा सकते हैं। बेबसाइट, प्रिंट मीडिया, टी.व्ही., वीडियो में ज्ञापन जैसे प्रचार मीडिया से विदेशों में क्षेत्र विशेष की छवि को उभारना, पोस्टरों एवं मानचित्रों, फिल्मों, दृश्य–श्रव्य यंत्रों सहित

पर्यटक प्रचार साहित्य का निर्माण करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना, व्यापार, मेलों, प्रदर्शनियों आदि में भाग लेना, गोष्ठियाँ आयोजित करना, आपस में विचार–विमर्श करना आदि महत्वपूर्ण कार्य पर्यटन विकास के अन्तर्गत आते हैं।

पर्यटन विकास के आधार –

मध्यप्रदेश स्थित विंध्य प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं, यहाँ पर विद्यमान प्राकृतिक आकर्षण घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों की माँग को पूरा करने में सक्षम है यहाँ की प्राकृतिक पारिस्थितिकी ऊँची–नीची टीलेदार धरती, हरी–भरी वादियाँ, कल–कल बहते झरने नदियों के सुन्दर तट, जल प्रपात, घाटियाँ, कंदराएँ, संगम सरोवर, हरे–भरे वन, वन्य जीव, जनजातीय जीवन संस्कृति, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितिकी आकर्षण, यहाँ के वन आदि सभी मिलकर एक आदर्श पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकास कर सकते हैं। यह भूदृ भाग प्रकृति का एक अनुपम उपहार के रूप में हैं, बस आवश्यकता यह है कि इस सौन्दर्य को हम सही ढंग से संजोयें व संवारे जिससे इसकी छवि एक आदर्श पर्यटन स्थल के रूप में उभरकर सामने आये। बघेलखण्ड में पर्यटन केन्द्रों के विकास का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित मापदण्डों को आधार माना गया है – 1. पर्यावरणीय आकर्षण, 2. आधारभूत बुनियादी सुविधायें ।

सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन

सांस्कृतिक विरासत किसी समूह या समाज की पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिली मूर्त और अमूर्त संपत्ति है। जब पर्यटक किसी स्थान की सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं, रीति–रिवाजों, कला, वास्तुकला और जीवनशैली को जानने के उद्देश्य से यात्रा करते हैं, तो इसे सांस्कृतिक पर्यटन कहा जाता है। यह न केवल ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा तक सीमित है, बल्कि इसमें लोक संगीत, हस्तशिल्प, खान–पान और धार्मिक आयोजन भी शामिल हैं। पर्यटन और विरासत के बीच संतुलन बनाए रखने से पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध बनते हैं जो समुदायों का समर्थन करते हैं, सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हैं और वैश्विक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।

सारणी क्र0

विंध्य प्रदेश में पर्यटन केन्द्र

क्र	पर्यटन क्रेन्द्र का नाम	प्रमुख्य स्थल से दूरी (कि. मी.) में	प्रमुख आकशण	सुविधाये
1	व्हाइट टाइगर रीवा– मुकुन्दपुर	सतना 50 रीवा–18 सीधी– शहडोल–225	सफेद शेर, चीतल, आवास, रेस्टोरेन्ट, बाजार हिरण, भालू, चीता, बन्दर बारहसिंघा, रंग बिरंगे पक्षी, ऐतिहासिक स्थल गोविन्दगढ़ ताल, किला, मंदिर एवं अन्य आकर्षण	आवास, भोजन परिवहन, सड़क गाइड,
2	चित्रकुट (सतना)			
3	बाँधवगढ़ राष्ट्रीय (उमरिया)	रीवा–125 सतना–115 शहडोल–75	सफेद शेर स्थली, वन्य जीव जन्तु, प्राकृतिक रमणीयता, चीता, सांभर, चीतल अजगर आदि।	आवास, भोजन परिवहन, सड़क, रेल, प्रशिक्षित गाइड एवं टूर आपरेटर सफारी कार, एलीफेन्ट राइडिंग
4	अमरकंटक	शहडोल–225 शहडोल–100 अनूपपुर–50	प्राकृतिक रमणीयता वन्य जीव–जन्तु, औषधीय पेड़, ऐतिहासिक स्थल, सांस्कृतिक स्थल जल प्रपात	आवास, भोजन परिवहन, सड़क गाइड, शहद प्राइवेट वहन

5				
6				
7				

पर्यटन विकास में विरासत की भूमिका

विरासत पर्यटन एक शक्तिशाली आर्थिक विकास उपकरण है, जो रोजगार पैदा करता है, व्यापार के नए अवसर प्रदान करता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है। भारत सरकार ने विरासत पर्यटन को आर्थिक विकास के एक प्रमुख इंजन के रूप में मान्यता दी है। प्रसाद और स्वदेश दर्शन जैसी पहलों के माध्यम से, सरकार देश में पर्यटन के विकास के लिए एक बड़ा ढांचा तैयार कर रही है। इन योजनाओं का उद्देश्य आगंतुकों को अद्वितीय अनुभव प्रदान करके भारत के पर्यटन क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना है।

नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावाः–

पर्यटन ने तकनीक–संचालित स्टार्टअप्स में तेजी से वृद्धि की है जो क्यूरेटेड अनुभव,। आधारित यात्रा योजना और डिजिटल बुकिंग प्लेटफॉर्म प्रदान करते हैं। यह इको–टूरिज्म, ग्रामीण प्रवास और अनुभवात्मक यात्रा जैसे क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर नवाचार को बढ़ावा देता है। युवा, विशेष रूप से टियर–2 व टियर–3 शहरों के, सरकार द्वारा समर्थित इनक्यूबेटर और एक्सेलरेटर के माध्यम से इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। पर्यटन मंत्रालय ने अपने "देखो अपना देश" वेबिनार के माध्यम से वर्चुअल टूरिज्म की पेशकश शुरू कर दी है। एरियल जैसे स्टार्टअप व्यक्तिगत यात्रा कार्यक्रम बनाने के लिये का लाभ उठाकर यात्रा उद्योग में क्रांति ला रहे हैं। इसके अलावा, महाराष्ट्र में ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व (TATR) ने वन्यजीवन कौशल अकादमी शुरू की है, जो वन–सीमांत गाँवों के युवाओं को उद्यमिता एवं इको–टूरिज्म के अवसरों का लाभ उठाने के लिये सशक्त बना रही है।

सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीतिः

पर्यटन सॉफ्ट पावर का एक महत्त्वपूर्ण साधन है, जो भारत की सांस्कृतिक गहनता, आध्यात्मिक विविधता और सभ्यतागत लोकाचार को प्रदर्शित करके वैश्विक स्तर पर भारत की छवि को निखारता है। यह लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देता है तथा अन्य देशों के साथ सद्भावना का निर्माण करता है। कार्यक्रम, सांस्कृतिक उत्सव और फिल्म पर्यटन भारत के राजनयिक संबंधों को सुदृढ़ करते हैं। प्रवासी और धार्मिक सर्किट सांस्कृतिक सेतु का काम करते हैं।

महाकुंभ– 2025 में 60 करोड़ से अधिक तीर्थयात्री आए थे, जिनमें बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक भी शामिल थे। वर्ष 2020 और 2024 के दौरान, अमेरिका, बांग्लादेश, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, मलेशिया, श्रीलंका, जर्मनी एवं फ्राँस भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के लिये शीर्ष स्रोत देश बनकर उभरे। इसके अलावा, वर्ष 2023 में विभिन्न भारतीय शहरों में आयोजित 2.0 पर्यटन कार्य समूह की बैठकों ने वैश्विक मंच पर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करने के लिये एक मंच के रूप में काम किया है, जिससे इस भूमिका को बल मिला है। पारंपरिक कलाओं, शिल्पों और पाककला विरासत को बढ़ावा देनारू भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जिसमें विविध कलाएँ, शिल्प और पाककला परंपराएँ शामिल हैं, पर्यटन संवर्द्धन का एक प्रमुख केंद्र बन गई है। उदाहरण के लिये, मुंबई की खाऊ गलियाँ पर्यटकों को स्थानीय स्ट्रीट फूड का प्रामाणिक स्वाद प्रदान करती हैं, जो शहर की जीवंत पाककला संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं। इसी प्रकार, दक्षिण भारतीय 'फिल्टर कॉफी' ट्रेल क्षेत्र की प्रतिष्ठित कॉफी संस्कृति को बढ़ावा देता है। इस तरह की पहल न केवल भारत की सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करती हैं, बल्कि स्थानीय कारीगरों और पाक–कला विशेषज्ञों के लिये वैश्विक मंच पर पहचान बनाने के अवसर भी उत्पन्न करती हैं, जिससे पर्यटन का अनुभव बेहतर होता है।

चिकित्सा और स्वास्थ्य पर्यटन में वृद्धि

विंध्य प्रदेश की किफायती और उन्नत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली ने इसे वैश्विक चिकित्सा पर्यटकों के लिये एक पसंदीदा गंतव्य बना दिया है, जिससे स्वास्थ्य पर्यटन क्षेत्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। **हील इन इंडिया पहल,** जो आधुनिक चिकित्सा को आयुर्वेद, योग एवं स्वास्थ्य चिकित्सा जैसी पारंपरिक प्रथाओं के साथ एकीकृत करती है, एक वैश्विक स्वास्थ्य सेवा केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को और मजबूत करती है। इसके अतिरिक्त, ई–वीजा और आयुष वीजा की शुरुआत सहित चिकित्सा वीजा प्रक्रियाओं

के सरलीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय रोगियों के लिये भारत में चिकित्सा उपचार और कल्याण सेवाओं तक अभिगम्यता को आसान बना दिया है, जिससे इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा मिला है। भारत का वेलनेस टूरिज्म उद्योग उल्लेखनीय वृद्धि के अदौर से गुजर रहा है, जिसका मूल्य 19.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर है और वर्ष 2031 तक 29.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है।

सतत् विकास लक्ष्यों का त्वरकः

पर्यटन कई सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) कृगरीबी उन्मूलन, लैंगिक समानता, स्थायी समुदाय और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा है। यदि पर्यटन का नियोजन सतत् रूप से किया जाये तो यह कम पारिस्थितिकीय दबाव के साथ आर्थिक विकास को संभव बनाता है। आज सचेत विलासिता, ईको–रिजॉर्ट और समुदाय–आधारित पर्यटन जैसी प्रवृत्तियाँ तेजी से उभर रही हैं। राष्ट्रीय सतत पर्यटन रणनीति एवं जैसी योजनाएँ ईको–सर्टिफिकेशन और स्वच्छता अनुपालन को प्रोत्साहित कर रही हैं। उदाहरण के लिये, हिमाचल प्रदेश की जिभी घाटी में, समुदाय–आधारित पर्यटन ने स्थानीय लोगों को, जो कभी मुख्य रूप से किसान थे, होमस्टे, निर्देशित पर्यटन, हस्तशिल्प और पारंपरिक व्यंजनों के माध्यम से जीविकोपार्जन करने में सक्षम बनाया है। यह मॉडल स्थानीय संस्कृति को संरक्षित करते हुए आय को बढ़ाता है।

रीवा जिले के पर्यटन स्थल :

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से रीवा पर्यटकों के आकर्शण का केन्द्र रहा है। यहॉ जल प्रपात, वन बाग एवं धार्मिक स्थल एवं नदियॉ निम्न है –

इको–पार्क प्रमुख बिंदुः

- मध्य प्रदेश रीवा में इको–पार्क का उद्घाटन 25 सितंबर 2023 को हुआ।
- 24 सितंबर, 2023 को मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम ने रीवा में इको–पार्क का उद्घाटन किया।
- रीवा शहर में मध्य प्रदेश इकोटूरिज्म विकास बोर्ड एवं रीवा लीजर प्राइवेट लिमिटेड के मध्य जनभागीदारी से डीबीएफओटी मॉडल पर बिहार इकोटूरिज्म एवं एडवेंचर पार्क का निर्माण किया गया है।
- यह इको–पार्क रीवा शहर से निकलने वाली बिहार नदी के टापू पर 5.20 हेक्टेयर भूमि पर विकसित किया गया है।

- यह इको पार्क पर्यटन गतिविधियों को नई गति देगा। यहां रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे.
- उल्लेखनीय है कि महानगर की तर्ज पर रीवा में निजी पूंजी निवेश से निर्मित इको–पार्क प्रदेश का पहला इको–पार्क है।
- 5.20 हेक्टेयर क्षेत्र में बने विश्व स्तरीय इको–पार्क के निर्माण में इको टूरिज्म बोर्ड और वन विभाग का सहयोग है, जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए सुविधाएं विकसित की गई हैं।

व्हाइट टाइगर सफारी

सफेद बाघ को महाराजा मार्तंड सिंह ने 27 मई, 1951 को सीधी जिले के बरगदी फॉरेस्ट क्षेत्र से पकड़ा था और बाद में जानवर को रीवा के गोविंदगढ़ पैलेस में लाया गया था, जहां से वह अगले ही दिन भाग गया और फिर लगभग 26 साल पहले मुकुंदपुर क्षेत्र में पाया गया। –रीवा से 27 किमी दूर। मोहन दो दशकों से अधिक समय तक इस क्षेत्र में रहा और उसकी संतानें धीरे–धीरे दुनिया के अन्य हिस्सों में फैल गईं है। महाराजा मार्तंड सिंह जूदेव व्हाइट टाइगर सफारी और चिड़ियाघर मुकुंदपुर सतना–रीवा

की स्थापना वन्यजीवों के संरक्षण के लिए आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने, आगंतुकों को वन्यजीवों के बारे में पुरस्कृत अनुभव देने और इस क्षेत्र में जंगली जानवरों के बचाव के लिए जगह प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। चिड़ियाघर प्रबंधन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक लक्ष्य के साथ काम कर रहा है। हर साल हम विभिन्न गतिविधियाँ करते हैं जिनमें विश्व पर्यावरण दिवस, वन्यजीव सप्ताह, प्रयागराज कुंभ मेले में प्रदर्शनी, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस और अनुभूति इको कैंप आदि जैसे महत्वपूर्ण दिनोंध्सप्ताहों के दौरान स्कूली बच्चों के साथ विभिन्न शैक्षिक और जागरूकता गतिविधियाँ शामिल हैं। गतिविधियाँ हैं प्रभात फेरी, पेंटिंग, क्विज, प्रश्नावली, खेल, सामान्य चर्चा, चिड़ियाघर के कर्मचारियों के साथ बातचीत और चिड़ियाघर का दौरा और भी बहुत कुछ।

चूँकि यह चिड़ियाघर प्राकृतिक वन क्षेत्र में है, इसलिए हमें ढेर सारा कूड़ा–कचरा और अन्य गिरे हुए पौधों की सामग्री प्राप्त होती है। इस कचरे का प्रभावी तरीके से उपयोग करने के लिए वर्मी कम्पोस्ट और ग्रीन कम्पोस्ट पिट बनाए गए हैं। ये गड्ढे न केवल परिसर को साफ रखने में मदद कर रहे हैं बल्कि 45 बिस्तरों की नव विकसित नर्सरी के लिए जैव खाद भी प्रदान कर रहे हैं। यह नर्सरी विभिन्न पौधों की मांग को पूरा कर रही है जो चिड़ियाघर परिसर के सौंदर्यीकरण और क्षेत्र की जैव विविधता में सुधार के लिए आवश्यक हैं।

आगंतुकों की संख्या में वृद्धि हुई है और विशेष दिनों में यह संख्या बहुत अधिक हो जाती है। चिड़ियाघर में रखे गए शाकाहारी जानवरों को हरे चारे की आपूर्ति के लिए चिड़ियाघर की सीमा के अंदर घास का मैदान भी विकसित किया गया है। चिड़ियाघर को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है इसलिए हमने घरेलू प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए और साथ ही हमारी टीम के सदस्यों ने अन्य चिड़ियाघरोंध्संस्थानों द्वारा विभिन्न स्थानों पर आयोजित अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लिया।

1. **पुरवा जल प्रपात :–**

यह जल टमस नदि पर बना है। यह सिरमौर से 10 किमी. दूर स्थित है, तथा यह 67 मीटर ऊचॉ जल प्रपात है यहॉ धार 7 पत्थरों से टकरा कर नीचे गिरती है। पानी कम होने कारण जल धारा सीढ़ियों में उछलती हुई दिखाई देती है।

2. **बहुती जल प्रपात :–**

यह जल प्रपात सबसे ऊचॉ है यह मऊगंज ओड्डा नदी पर रीवा नगर से 75 किमी. दूर बहुती ग्राम के पास है। इस प्रपात का पानी एक बडे कुण्ड में गिरता है। इस कुण्ड के दक्षिण भाग में एक गुफा है जिसमें भांकर जी की मूर्ति स्थापित है। इसी कुण्ड के पास अश्टभुजी देवी का मंदिर है यहां प्रतिवर्श मकर संक्रांति में धार्मिक मेला लगता है।

3. **क्योटि जल प्रपात :–**

जिले की सिरमौर तहसील में नगर से 37 किमी. उत्तर पूर्व दि ा में क्योटि नामक गांव के पास महाना नदी के लगभग 200 मीटर की ऊचॉई से यह गिरकर यहा प्रपात बनाती है। सुरम्य, मनोरम एवं प्राकृतिक सौन्दर्य भरे जलप्रपातों के लिए सिरमौर एशिया महाद्वीप में प्रसिद्ध है। क्योटी जलप्रपात रीवा से 37 किलोमीटर उत्तर पूर्व की ओर सिरमौर तहसील में स्थित है। के का अर्थ है पानी और वटी कहते हैं धारा को। इस तरह पानी और धारा से मिलकर केवटी शब्द बना है। वैदिक शब्दों में इसका अर्थ हुआ तपस्या का वह स्थल जहाँ जल की अजस्र धारा प्रवाहित हो।

केवटी प्रपात दर्शनीय एवं मनोरम है। यह प्रपात टमस की सहायक महाना नदी द्वारा बनाया गया है। सतत जल धार गिरते रहने से उसके आघात से नीचे एक कुण्ड बन गया है। महाना नदी रीवा से लगभग 15 किलोमीटर दूर ईशान कोण में पुरान ग्राम के मतइन तालाब से निकलती है। यहाँ से 70 किलोमीटर दूर चलकर केवटी प्रपात बनाती है। केवटी की ऊँचाई 331 फुट है। महाना नदी प्रपात के एक किलोमीटर पहले से चट्टानों को अपने प्रबल वेग से काट देती है। प्रपात के बनने के पहले यह 30 फुट गहरी है तथा इसका पाट भी बहुत चौड़ा हो जाता है। बाढ़ आने से पूर्व पश्चिमी प्रपातों में पानी गिरता है। लेकिन सामान्य स्थिति में मुख्य धारा पश्चिम प्रपात से ही गिरती है। केवटी प्रपात की ऊंचाई 200 मीटर है। प्रपात के पूर्वी तट पर प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठाकुर रणमत सिंह की इतिहास प्रसिद्ध गढ़ी है। इनके नाम पर रीवा के भूतपूर्व दरबार कालेज का नाम रखा गया है। गढ़ी से नीचे प्रपात के कुण्ड तक जाने का रास्ता बना है।

4. **चचाई जल प्रपात :–**

पर्यटकों के आकर्शण का यह वि ाश्ट केन्द्र रीवा से 50 किमी. उत्तर की ओर है इस प्रपात में बीहर नदी के लगभग 115 मीटर ऊचॉई से नीचे गिरती हुई एक मनोरम घाटी में प्रवे ा करती है।इसकी चौड़ाई पौने 200 मीटर है। पर्यटकों के ठहरने हेतु यहा सरकारी विश्राम गृह भी है।

5. **विलौही जलप्रपात**

यह प्रपात हनुमना तहसील में गोरमा नदी पर है तथा हनुमना कस्बा से 15 किलोमीटर की दूरी पर बिल्कुल मैदानी भूमि में स्थित है। इसकी ऊँचाई 334 फुट है। गोरमा नदी, गोयला, नामक काया की एक गली से जन्म लेती है जो आगे चलकर 40 किलोमीटर की दूरी तय कर बैलोही जल प्रपात में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रपात को स्थानीय बघेली बोली में छोड़ का कूड़ा भी कहते हैं।

बैलोही जलप्रपात देखने में हरा प्रतीत होता है। जो डरावना भी लगता है। इस प्रपात को चारों दिशाओं में घूमकर एवं परिवर्तित की परिक्रमा कर देखा जा सकता है। जब गोरमा नदी में बाढ़ आ जाती है तो यहाँ का दृश्य बड़ा मनोरम लगता है। यहाँ प्रतिवर्ष जनवरी में मकर संक्रांति पर एक मेला भी लगता है।

6. **देवतालाब मंदिर**

ऋषि मर्कण्डु की संतान महर्षि मार्कण्डेय जन्म से ही शिवभक्त थे। उन्होंने भारत भर में कई स्थानों पर भगवान शिव के स्वरूप को स्थापित किया। रीवा जिले के देवतालाब नामक स्थान में पवित्र शिव मंदिर की स्थापना के पीछे महर्षि मार्कण्डेय का ही योगदान माना जाता है। मान्यता है कि रीवा का यह मंदिर मात्र एक रात में बन कर तैयार हुआ था।

मंदिर का इतिहास

महर्षि मार्कण्डेय भारतवर्ष में सनातन और शिव भक्ति के प्रचार–प्रसार के लिए भ्रमण किया करते थे। उनकी इसी यात्रा के मध्य उनका आगमन विंध्य के रेवा क्षेत्र में हुआ जो वर्तमान में रीवा के नाम से जाना जाता है। रीवा में देवतालाब नामक स्थान पर जब महर्षि ने विश्राम के लिए अपना डेरा जमाया तब अनायास ही उनके मन में भगवान शिव के दर्शन की अभिलाषा जाग उठी। महर्षि ठहरे शिव भक्त तो उन्होंने अपने आराध्य से कह दिया कि चाहे जिस रूप में दर्शन मिलें किन्तु दर्शन मिलने तक वे यहीं तप करते रहेंगे।

कई दिनों तक महर्षि मार्कण्डेय देवतालाब में तप करते रहे। उनके तप की तीव्रता को देखकर भगवान शिव ने विश्वकर्मा जी को आदेश दिया कि वो उस स्थान पर एक शिव मंदिर का निर्माण करें। भगवान विश्वकर्मा जी ने एक विशालकाय पत्थर से रातों रात उस स्थान पर शिव मंदिर का निर्माण कर दिया। तपस्या में लीन महर्षि मार्कण्डेय को इस पूरी घटना का किंचित मात्र भी आभास नहीं हुआ। मंदिर बन जाने के पश्चात भगवान शिव की मानस प्रेरणा से महर्षि ने अपना तप समाप्त किया। शिव मंदिर देखकर महर्षि अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने वहाँ स्थित कुंड में स्नान कर भगवान शिव की आराधना की। तभी से यह मंदिर पूरे विंध्य प्रदेश में पूज्य है।

विंध्य क्षेत्र में रामेश्वरम के तुल्य है देवतालाब

पूर्वी मध्यप्रदेश में एक मान्यता है कि चार धाम की यात्रा तभी सम्पूर्ण एवं सफल मानी जाती है जब गंगोत्री का जल रामेश्वरम स्थित शिवलिंग के साथ देवतालाब स्थित शिवलिंग पर भी अर्पित किया जाए। इसी कारण तीर्थों की यात्रा पूर्ण करने के पश्चात कई लोग गंगोत्री का जल लेकर

देवतालाब आते हैं और अपनी तीर्थ यात्रा को सफल बनाते हैं। इस क्षेत्र में उपस्थित कई पवित्र जल कुंडों के कारण इस क्षेत्र का नाम देवतालाब हुआ।

मंदिर के विषय में एक और मान्यता है कि यहाँ मुख्य मंदिर के नीचे जमीन के अंदर एक और मंदिर है जहाँ चमत्कारिक मणि मौजूद है। कई दिनों तक मंदिर के नीचे से लगातार साँप बाहर निकलते रहे। श्रद्धालुओं को समस्या होने पर अंततः जमीन के नीचे स्थित इस मंदिर के दरवाजे को हमेशा के लिए बंद करा दिया गया।

कैसे पहुँचे?

सबसे नजदीकी हवाई अड्डा प्रयागराज में है। रीवा की प्रयागराज से दूरी लगभग 125 किमी है। इसके अलावा रीवा, वाराणसी और जबलपुर से भी समान दूरी पर है जहाँ हवाईअड्डे हैं। इन दोनों शहरों की रीवा से दूरी लगभग 250 किमी है। दिल्ली, राजकोट, इंदौर, भोपाल और नागपुर जैसे शहरों से रीवा सीधे रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। देवतालाब मंदिर, रीवा रेलवे स्टेशन से मिर्जापुर मार्ग पर लगभग 60 किमी की दूरी पर स्थित है।

सड़क मार्ग से भी यहाँ पहुँचने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं है। वाराणसी से मिर्जापुर होते हुए जबलपुर जाने वाले यात्रियों के लिए देवतालाब स्थित भगवान शिव के दर्शन सुलभ हो सकते हैं, क्योंकि यह मंदिर मुख्यमार्ग में ही स्थित है।

गोविन्दगढ़ पैलेस और तालाब

महाराजा रीवा की ग्रीष्मकालीन राजधानी गोविंदगढ़, मध्य प्रदेश, भारत में रीवा से लगभग 18 किमी दूर है। रीवा, लगभग 13,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र के साथ, बागेलखंड एजेंसी में सबसे बड़ी रियासत थी और मध्य भारत एजेंसी में दूसरी सबसे बड़ी थी। बघेलखंड के लिए ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट पूर्व भारतीय रेलवे के सतना में रहते थे। बघेलखंड एजेंसी को 1933 में भंग कर दिया गया और रीवा को इंदौर रेजीडेंसी के अधिकार में रखा गया।

सुंदरजा आम के लिए प्रसिद्ध गोविंदगढ़ को मिनी वृन्दावन के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र का लगभग एक–तिहाई हिस्सा घने जंगलों से ढका हुआ था और लकड़ी और अन्य पेड़ों की विभिन्न प्रजातियों का घर था। इस स्थान पर चौंडी मंदिर, राम गोविंद मंदिर और हनुमान मंदिर जैसे कई मंदिर हैं।

रीवा का किला

मध्य प्रदेश के रीवा शहर में घूमने के लिए कई जगह हैं. सबसे खास रीवा का किला है. यह किला देश भर के उन चुनिंदा किलों में शामिल है जहां आज भी राज परिवार के सदस्य रहते हैं. यह किला अपने आप में ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए है. दूर दूर से सैलानी इस किले को देखने के लिए आते हैं..

- मध्यप्रदेश के रीवा शहर स्थित किला मध्य भारत की प्राचीन और ऐतिहासिक किलों में शुमार है. यह किला ऐतिहासिक महत्व और सुंदरता को लेकर जाना जाता है. यह रीवा में पर्यटकों का मुख्य आकर्षण हैं. इसके पीछे दो नदियां हैं, जो किले को प्राकृतिक सुंदरता प्रदान करती हैं. इन्ही दो नदियों के संगम पर बना रीवा किला अपने ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए खड़ा हुआ है।
- किले का मुख्य द्वार भारतीय वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है. दरवाजा तुर्क शैली के मेहराओं से आच्छादित है और तुर्क शैली से हद तक प्रभावित भी है. इस दरवाजे का निर्माण महाराजा विश्वनाथ सिंह जूदेव ने 1833– 34 में कराया था. यह दरवाजा ऊपरहटी की ओर खुलता है।
- रीवा किला का पुतरिहा दरवाजा किले का सबसे खूबसूरत दरवाजा है. अंग्रेजों ने इस दरवाजे को स्विंग गेट भी कहा था. इस गेट को कल्चुरी नरेशों के द्वारा बनवाया गया था. इतिहासकार असद खान बताते हैं कि पुतरिहा दरवाजा साढ़े 12 फीट चौड़ा और लगभग 30 फीट ऊंचा है. उस दरवाजे में भगवान शिव की शादी का पूरा मंचन दिखाया गया है. गेट में सुंदर–सुंदर अप्सराएं श्रृंगार करते हुए दिखाई दे गई हैं।
- मध्य प्रदेश के रीवा शहर में घूमने लायक कई जगह हैं. इसमें रीवा किला सबसे खास है. यह किला अपने आप में ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए है. दूर दूर से सैलानी इस किले को देखने के लिए आते हैं. यह किला मध्य भारत की प्राचीन और ऐतिहासिक किला में शुमार है।
- इतिहासकार असद खान के अनुसार, इस किले का निर्माण शेर शाह सूरी के बेटे शहजादा जलाल खां के द्वारा शुरू किया गया था, लेकिन पिता की मृत्यु के बाद वह निर्माण कार्य को अधूरा छोड़ कर चला गया था.विक्रमदित्य सिंह ने बांधवगढ़ की राजधानी छोड़कर रीवा को अपनी राजधानी बनाने का निर्णय लिया. उसके बाद बघेल राजाओं के द्वारा इस किले को नए सिरे से बनाया गया था।
- वर्ष 1618 में राजा विक्रमदित्य सिंह ने बांधवगढ़ को पूरी तरह से छोड़ कर रीवा को अपना राज्य बनाने का फैसला लिया था.उसके बाद इस किले को नए सिरे से बनाया गया था. तब से लेकर अब

तक रीवा बघेल शासकों की राजधानी रही है. बघेल शासकों के द्वारा कई महल और किले बनवाए गए।

- देश भर में राजा रजवाड़ों के द्वारा बनाए गए किले में रीवा का किला बेहद सुंदर माना जाता है. इस किले के अंदर कई तरह के महल बनाए गए हैं, जिसमें मोती महल, सोन महल, शीश महल भी शामिल हैं. इस किले में कई भूतल हैं. इसके साथ ही धरती के नीचे कई गोपनीय रास्ते भी बनाए गए हैं. ये सुरंगे आज भी मौजूद हैं।
- इतिहासकार असद खान ने बताया कि राजा गुलाब सिंह ने रीवा किले की मरम्मत का काम कराया था. उनके द्वारा कई गोपनीय सभागार का निर्माण भी कराया गया था. रीवा किले के संग्रहालय में आज भी बहुत सी पुरानी चीजों को संजो कर रखा गया है, जोकि किले से जुड़े हुए ऐतिहासिक महत्व को बताती हैं।
- अब रीवा किले की तस्वीर काफी बदल चुकी है, जबकि पुष्पराज सिंह रीवा के राजा हैं, जो मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं. उनके द्वारा करोड़ों रुपये खर्च कर किले की मरम्मत का कार्य कराया गया है. यही वजह है कि ये किला आज भी वैसा ही मजबूत है जितना सदियों पहले था।
- रीवा देश भर की उन चुनिंदा रियासतों में से एक है जहां आज भी राज परिवार के सदस्य अपने पुराने किले में ही निवास करते हैं. यही वजह है कि देश के अधिकांश किले और महलों की तरह यहां का किला खंडहर में तब्दील होकर वीरान नहीं हुआ है. आज भी यहां की रौनक देखने लायक है. दशहरा में यहां आज भी गद्दी पूजा होती है और राज परिवार के सदस्य अपने पुराने पारंपरिक राजा महाराजाओं वाले पोशाक में दिखाई देते है।

7. **बीहर नदी**

विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी की गोद में फैले हुए विंध्य क्षेत्र के मध्यभाग में बसा हुआ रीवा शहर प्रदेश के ऐतिहासिक शहरों में से एक है. इस शहर में बीहर नदी बहती है. इस नदी के किनारे भगवान शिव का ऐतिहासिक मंदिर है. इन मंदिरों में पचमठा धाम मंदिर भी शामिल है।

8. **तमसा टोन्स नदी (टमस)**

तमसा नदी (Tamsa River), जिसे टोंस नदी (Tons River) भी कहा जाता है, भारत के मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों में बहने वाली एक नदी है। यह गंगा नदी की एक उपनदी है। यह मध्य प्रदेश के मैहर जिले में कैमूर पर्वतमाला में स्थित तमसा कुण्ड नामक जलाशय से उत्पन्न होती है। उत्तर–पूर्वी दिशा में लगभग 64 किलोमीटर की पहाड़ी यात्रा के बाद यह मैदानी भाग में प्रवेश करके बेलन नदी से मिलती है। उत्तर प्रदेश में प्रयागराज से 32 किलोमीटर दूर ही सिरसा के निकट यह गंगा नदी में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई लगभग 265 किलोमीटर है। इस के मार्ग में कई सुंदर जलप्रपात भी हैं।

भारत में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची

भारत के सभी 44 विश्व धरोहर स्थल जुलाई 2025 की स्थिति में

क्रमांक	स्थल	विश्व विरासत स्थल	राज्य	शामिल एवं विस्तार वर्ष
1	सांस्कृतिक स्थल	आगरा किला	उत्तरप्रदेश	1983
2	सांस्कृतिक स्थल	ताजमहल, आगरा	उत्तरप्रदेश	1983
3	सांस्कृतिक स्थल	अजंता की गुफाएं, औरंगाबाद	महाराष्ट्र	1983
4	सांस्कृतिक स्थल	एलोरा की गुफाएं	महाराष्ट्र	1983
5	सांस्कृतिक स्थल	सूर्य मंदिर, कोणार्क	ओडिशा	1984
6	सांस्कृतिक स्थल	महाबलीपुरम स्थित स्मारक समूह	तमिलनाडु	1984
7	प्राकृतिक स्थल	काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क	असम	1985
8	प्राकृतिक स्थल	मानस वन्यजीव अभ्यारण	असम	1985
9	प्राकृतिक स्थल	केवलादेव राष्ट्रीय पार्क	राजस्थान	1985
10	सांस्कृतिक स्थल	गोवा के चर्च एवं कॉन्वेंट	गोवा	1986
11	सांस्कृतिक स्थल	फतेहपुर सीकरी, आगरा	उत्तरप्रदेश	1986
12	सांस्कृतिक स्थल	खजुराहो स्थित स्मारक समूह	मध्यप्रदेश	1986
13	सांस्कृतिक स्थल	हम्पी स्थित स्मारक समूह, बेल्लारी	कर्नाटक	1986
14	प्राकृतिक स्थल	सुंदरबन राष्ट्रीय पार्क	पश्चिम बंगाल	1987
15	सांस्कृतिक स्थल	एलीफेंट की गुफाएं	महाराष्ट्र	1987

16	सांस्कृतिक स्थल	पट्टाडकल स्थित स्मारक समूह	कर्नाटक	1987
17	सांस्कृतिक स्थल	महान चोल मंदिर (बृहदेश्वर मंदिर)	तमिलनाडु	1987 विस्तार वर्ष 2004
18	प्राकृतिक स्थल	नंदा देवी राष्ट्रीय पार्क चमोली	उत्तराखण्ड	1988 विस्तार वर्ष 2005
19	सांस्कृतिक स्थल	सांची बौद्ध स्मारक	मध्यप्रदेश	1989
20	सांस्कृतिक स्थल	हुमायूँ का मकबरा	दिल्ली	1993
21	सांस्कृतिक स्थल	कुतुबमीनार व सम्बद्ध स्मारक	दिल्ली	1993
22	सांस्कृतिक स्थल	इंडियन माउंटेन रेलवे (1 दार्जिलिंग पर्वतीय रेलवे 2 नीलगिरी पर्वतीय रेलवे 3 कालका शिमला रेलवे)	पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश	1999, 2005, 2008
23	सांस्कृतिक स्थल	महाबोधि मंदिर बोधगया	बिहार	2002
24	सांस्कृतिक स्थल	भीम बेटका की गुफाएं	मध्यप्रदेश	2003
25	सांस्कृतिक स्थल	चाम्पानेर पावागढ़ आर्कियोलॉजिकल पार्क	गुजरात	2004
26	सांस्कृतिक स्थल	छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, मुंबई	महाराष्ट्र	2004
27	सांस्कृतिक स्थल	लाल किला	दिल्ली	2007
28	सांस्कृतिक स्थल	रानी का वाव, पाटण	गुजरात	2008
29	सांस्कृतिक स्थल	जंतर मंतर, जयपुर	राजस्थान	2010

30	प्राकृतिक स्थल	पश्चिम घाट सह्याद्रि पर्वत	केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र	2012
31	सांस्कृतिक स्थल	राजस्थान के राजपूताना शैली के 06 किले (चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, जयपुर, झालावार)	राजस्थान	2013
32	प्राकृतिक स्थल	ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क	हिमाचल प्रदेश	2014
33	सांस्कृतिक स्थल	चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लैक्स	हरियाणा	2016
34	मिश्रित स्थल	कंजनजंगा राष्ट्रीय उद्यान	सिक्किम	2016
35	सांस्कृतिक स्थल	नालंदा महाविहार	बिहार	2016
36	सांस्कृतिक स्थल	ऐतिहासिक शहर अहमदाबाद	गुजरात	2017
37	सांस्कृतिक स्थल	मुम्बई की विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको संरचनाएं	महाराष्ट्र	2018
38	सांस्कृतिक स्थल	जयपुर शहर	राजस्थान	2019
39	सांस्कृतिक स्थल	हड़प्पाकालीन धौलावीरा	गुजरात	2021
40	सांस्कृतिक स्थल	काकतीय रूद्रेश्वर मंदिर, वारंगल	तेलंगाना	2021
41	सांस्कृतिक स्थल	शांति निकेतन	पश्चिम बंगाल	2023
42	सांस्कृतिक स्थल	होयसल के पवित्र मंदिर समूह	कर्नाटक	2023
43	सांस्कृतिक स्थल	मोइदम अहोम राजवंश की टीलेनुमा दफन प्रणाली	असम	2024
44	सांस्कृतिक स्थल	भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य	महाराष्ट्र, तमिलनाडु	2025

मध्य प्रदेश में पर्यटन विकास, विरासत और सांस्कृतिक संरचनाएं: -

मध्य प्रदेश, जिसे "भारत का हृदय" भी कहा जाता है, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, जो इसे पर्यटन विकास का एक प्रमुख केंद्र बनाते हैं । राज्य सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लगातार नई योजनाएं बना रही है, जिससे यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है ।

डिजिटल टीम, भोपाल

पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। इसकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरें, प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीव संपदा का आकर्षण "अतुलनीय मध्यप्रदेश" के रूप में पर्यटकों की पहली पसंद बन रहा है। प्रदेश ने वर्ष 2024 में पर्यटन के क्षेत्र में कीर्तिमान रचा है। मध्यप्रदेश में रिकॉर्ड 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन हुआ। यह उपलब्धि वर्ष 2023 की तुलना में 19.6 प्रतिशत, 2019 से लगभग 50.6 प्रतिशत और 2020 की तुलना में 526 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है।

प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक,

मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक संपदा, ऐतिहासिक धरोहरें और वन्यजीव विविधता, पर्यटकों को एक सम्पूर्ण अनुभव प्रदान करती हैं। वर्ष 2024 में 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन इस बात का प्रमाण है कि मध्यप्रदेश देश ही नहीं, वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर भी मजबूती से उभर रहा है। यह उपलब्धि शासन की दूरदर्शी नीतियों, आधारभूत ढांचे के विकास और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी का प्रतिफल है। विदेशी पर्यटकों का आगमन वर्ष 2024 में 1.67 लाख विदेशी पर्यटकों ने भी मध्यप्रदेश की सैर की। खजुराहो में 33 हजार 131, ग्वालियर में 10 हजार 823 और ओरछा में 13 हजार 960 विदेशी पर्यटक पहुंचे। शहरी पर्यटन में भी विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई, जिसमें इंदौर में 9,964 और भोपाल में 1,522 विदेशी पर्यटक शामिल हैं। बांधवगढ़ में 29 हजार 192, कान्हा में 19 हजार 148, पन्ना में 12 हजार 762 और पेंच में 11 हजार 272 विदेशी पर्यटक आए, जो मध्यप्रदेश की वैश्विक अपील को दर्शाता है।

धार्मिक पर्यटन देश की आस्था का नया केंद्र

प्रदेश के धार्मिक स्थलों ने वर्ष 2024 में 10.7 करोड़ पर्यटकों को आकर्षित किया, जो वर्ष 2023 की तुलना में 21.9: अधिक है। प्रदेश के शीर्ष 10 पर्यटन स्थलों में से 6 धार्मिक स्थल शामिल हैं। उज्जैन 7.32 करोड़ पर्यटकों के साथ इस सूची में सबसे आगे रहा, जो वर्ष 2023 के 5.28 करोड़ की तुलना में 39: अधिक है। चित्रकूट में भी 1 करोड़ से अधिक पर्यटक आए, जो वर्ष 2023 के 90 लाख की तुलना में 33: अधिक है। मैहर में 1.33 करोड़, अमरकंटक में 40 लाख, सलकनपुर में 26 लाख और ओंकारेश्वर में 24 लाख पर्यटक पहुंचे। महाकाल लोक, ओंकारेश्वर महालोक, श्रीराम वनगमन पथ, देवी लोक, राजा राम लोक, हनुमान जैसी परियोजनाओं ने धार्मिक पर्यटन को आध्यात्मिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है।

विरासत पर्यटन इतिहास की जीवंत गाथा

मध्यप्रदेश की समृद्ध विरासत ने 2024 में 80 लाख से अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया, जो 2023 के 64 लाख की तुलना में 25: की वृद्धि दर्शाता है। ग्वालियर में पर्यटकों की संख्या में 3 गुना वृद्धि देखी गई, जहां 9 लाख से अधिक पर्यटक पहुंचे, जो 2023 की तुलना में 3.69 लाख की उल्लेखनीय वृद्धि है। खजुराहो (4.89 लाख), भोजपुर (35.91 लाख) और महेश्वर (13.53 लाख) में भी पर्यटकों ने इन समृद्ध विरासतों का आनंद लिया। यूनेस्को ने हाल ही में भोजपुर को अपनी टेंटेटिव सूची में शामिल किया है और ग्वालियर को षक्रिएटिव सिटी ऑफ म्यूजिकष के रूप में मान्यता दी है। मध्यप्रदेश में अब 3 स्थायी और 15 टेंटेटिव सूची में कुल 18 यूनेस्को धरोहरें हैं। स्थायी सूची में खजुराहो के मंदिर समूह, भीमबेटका की गुफाएं और सांची स्तूप शामिल हैं। सम्राट अशोक के शिलालेख, चौसठ योगिनी मंदिर, गुप्तकालीन मंदिर, बुंदेला शासकों के महल और किले, ग्वालियर किला, बुराहनपुर का खूनी भंडारा, चंबल घाटी के शैल कला स्थल, भोजपुर का भोजेश्वर महादेव मंदिर, मंडला स्थित राम नगर के गोंड स्मारक, धमनार का ऐतिहासिक समूह, मांडू के स्मारकों का समूह, ओरछा का ऐतिहासिक समूह, नर्मदा घाटी में भेड़ा घाट लमेटाघाट, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और चंदेरी टेंटेटिव लिस्ट में हैं।

वन्यजीव पर्यटन प्रकृति और रोमांच का संगम

ग्रीन, क्लीन और सेफ मध्यप्रदेश "टाइगर स्टेट" "लेपर्ड स्टेट", "घड़ियाल स्टेट", "चीता स्टेट" और "वल्चर स्टेट" के रूप में जाना जाता है, जिसमें देश का सबसे अधिक वन क्षेत्र है। राज्य में 12 राष्ट्रीय

उद्यान, 25 वन्यजीव अभयारण्य और 9 टाइगर रिजर्व हैं। कान्हा (2.48 लाख), पेंच (1.92 लाख), बांधवगढ़ (1. 94 लाख), पन्ना (3.85 लाख) और मढ़ई (4.34 लाख) जैसे प्रमुख वन्यजीव स्थलों पर पर्यटकों का आगमन हुआ। कुनो पालपुर राष्ट्रीय उद्यान में अफ्रीकी चीतों की पुनर्स्थापना परियोजना ने भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है।

प्राकृतिक पर्यटन प्रकृति की गोद में अविस्मरणीय अनुभवः

मध्यप्रदेश का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों के लिए एक अनमोल खजाना है। पचमढ़ी, अमरकंटक, भेड़ाघाट, हनुवंतिया, गांधीसागर, तामिया, सैलानी आइलैंड और सरसी आइलैंड जैसे स्थल प्राकृतिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं। वर्ष 2024 में पचमढ़ी में 2.87 लाख पर्यटक और भेड़ाघाट में 2.34 लाख पर्यटक पहुंचे। यहां रिसॉर्ट्स, एडवेंचर, स्पोर्ट्स, ट्रेकिंग ट्रेल्स और कैंपिंग सुविधाओं ने पर्यटकों को नया अनुभव दिया। गांधीसागर डैम, सैलानी आइलैंड, तामिया की पातालकोट घाटी और सरसी आइलैंड में प्राकृतिक सौंदर्य ने पर्यटकों को प्रकृति के और करीब लाया।

ग्रामीण पर्यटन संस्कृति और आतिथ्य का जीवंत अनुभवः

मध्यप्रदेश में ग्रामीण पर्यटन ने स्थानीय संस्कृति और आतिथ्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 63 पर्यटन ग्राम विकसित किए गए हैं। प्रदेश में 470 से अधिक होमस्टे का निर्माण किया गया है, जिनसे अब तक 24 हजार से अधिक अतिथि स्थानीय संस्कृति और खानपान का अनुभव ले चुके हैं। पचमढ़ी, कान्हा और अमरकंटक जैसे क्षेत्रों के आसपास के गांवों में होम स्टे सुविधाएं पर्यटकों के लिए अनूठा अनुभव बन गई है। चंदेरी में भारत के पहले हैंडलूम गांव प्राणपुर ने स्थानीय शिल्पकारों को वैश्विक पहचान दिलाई है। आदिवासी समुदायों की कला जैसे गोंड, भील पेंटिंग और मांडना आर्ट पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं।

फिल्म पर्यटन सिनेमाई जादू का नया गंतव्यः

मध्यप्रदेश फिल्म पर्यटन के क्षेत्र में भी एक अलग पहचान बना रहा है। चंदेरी और महेश्वर जैसे स्थल फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद बन गए हैं। स्त्री 2 की शूटिंग ने चंदेरी को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाया, जहां 47 हजार 630 पर्यटक पहुंचे। महेश्वर में 13.53 लाख पर्यटक आए, जो कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्मों की शूटिंग का गवाह बना। हाल ही प्रदेश में निर्मित फिल्म होमबाउंड को फिल्म जगत के प्रतिष्ठित कान्स फिल्म फेस्टिवल में दुनिया भर के दिग्गजों की प्रशंसा मिली। नई फिल्म नीति–2025 और पर्यटन सुविधा सेल ने मध्यप्रदेश को फिल्म निर्माताओं के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाया है। प्रदेश में स्त्री,

सुई धागा, दबंग 2, पैडमैन, पंचायत (वेब सीरीज) और महारानी जैसे प्रोजेक्ट्स ने प्रदेश की सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित किया। खजुराहो, ग्वालियर और मांडू जैसे स्थल भी फिल्म शूटिंग के लिए लोकप्रिय हुए।

शहरी पर्यटन आधुनिकता और संस्कृति का मेल :

भोपाल, इंदौर और जबलपुर जैसे शहर अपनी आधुनिकता, स्वच्छता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाने जाते हैं। वर्ष 2024 में इंदौर में 1.02 करोड़, भोपाल में 22 लाख और जबलपुर में 23 लाख पर्यटक पहुंचे। इंदौर ने 7वीं बार स्वच्छ भारत सर्वेक्षण में पहला स्थान हासिल किया है, जो इसे एक स्वच्छ और स्मार्ट पर्यटन गंतव्य बनाता है। मध्यप्रदेश ने वर्ष 2024 में पर्यटन के हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए देश और दुनिया के मानचित्र पर अपनी अलग पहचान बनाई है। धार्मिक आस्था से लेकर ऐतिहासिक विरासत, वन्यजीव रोमांच से लेकर प्राकृतिक सौंदर्य, ग्रामीण आत्मीयता से लेकर शहरी आधुनिकता और सिनेमाई आकर्षण तक "अतुलनीय मध्यप्रदेश" ने हर पर्यटक को एक नया अनुभव दिया है। प्रदेश में 13.41 करोड़ पर्यटकों का आगमन इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश में पर्यटन न केवल तेजी से बढ़ रहा है, बल्कि सतत विकास और समावेशिता के नए प्रतिमान भी स्थापित कर रहा है। राज्य सरकार की प्रतिबद्धता, नीतिगत नवाचार और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से मध्यप्रदेश आगामी वर्षों में भी पर्यटन का नया अध्याय रचेगा।

पर्यटन विकास और नई पहलें

मध्य प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिनमें शामिल हैं:–

पीएमश्री हेली पर्यटन सेवा मध्य प्रदेश, पीएमश्री हेली पर्यटन सेवा शुरू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। इस सेवा का उद्देश्य पर्यटकों को धार्मिक और पर्यटन स्थलों तक आसानी से पहुँचाना है। ग्रामीण पर्यटन राज्य में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 63 पर्यटन ग्राम विकसित किए गए हैं और 470 से अधिक होमस्टे बनाए गए हैं, जहाँ पर्यटक स्थानीय संस्कृति और खान–पान का अनुभव कर सकते हैं। गोवा के साथ सहयोग मध्य प्रदेश और गोवा ने विरासत, वन्यजीव और सांस्कृतिक अनुभवों को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग किया है।

प्रमुख विरासत और सांस्कृतिक स्थल

मध्य प्रदेश कई विश्व धरोहर स्थलों और ऐतिहासिक इमारतों का घर है, जो इसकी गौरवशाली विरासत को दर्शाते हैं ।

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- खजुराहो के मंदिर चंदेल शासकों द्वारा बनवाए गए ये मंदिर अपनी अद्भुत वास्तुकला के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।
- सांची का स्तूप यह भारत की समृद्ध बौद्ध विरासत का प्रतीक है और एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है।
- भीमबेटका की गुफाएँ ये गुफाएँ अपने शैल चित्रों और कलाकृतियों के लिए जानी जाती हैं, जो पुरापाषाण युग के हैं। विंध्य प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता, जिसमें घने जंगल, राष्ट्रीय उद्यान और पहाड़ियाँ शामिल हैं, के लिए भी जाना जाता है। कान्हा और बांधवगढ़ जैसे राष्ट्रीय उद्यान वन्यजीव प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं।

विंध्य प्रदेश पर्यटन विकास से कितने रोजगार सृजित होंगे :–

विंध्य प्रदेश पर्यटन विकास से हजारों प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे, विशेषकर रीवा टूरिज्म कॉन्क्लेव के 2,710–3,000 करोड़ निवेश से। सटीक संख्या अनुमानित है, लेकिन स्थानीय युवाओं को होटल, गाइड, परिवहन व हस्तशिल्प में अवसर मिलेंगे।

निवेश से रोजगार अनुमान :–

रीवा रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव में 6 कंपनियों को जमीन आवंटन से सैकड़ों प्रत्यक्ष रोजगार व हजारों अप्रत्यक्ष (होटल, रिसॉर्ट, इको–टूर) पैदा होंगे। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि विंध्य क्षेत्र रोजगार का बड़ा जरिया बनेगा, जहां हजारों युवाओं को लाभ। मध्य प्रदेश पर्यटन नीति से 21 लाख राज्यव्यापी रोजगार संभावना, विंध्य को बड़ा हिस्सा।

प्रमुख क्षेत्र :–

धार्मिक पर्यटन– विंध्य कॉरिडोर व काल भैरव लोक से गाइड व सुविधा कर्मी।

इको–टूरिज्म– सफारी, जलप्रपात विकास से ड्राइवर, कुक व ट्रेनर।

कौशल विकास– शहडोल फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट से प्रशिक्षित युवा।

प्रभावः– हवाई सेवा व होमस्टे से ग्रामीण रोजगार बढ़ेगा, अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

निष्कर्श :

विंध्य एवं मध्य प्रदेश के पर्यटन विकास, विरासत और सांस्कृतिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कई सरकारी योजनाएं और सांस्कृतिक पहल इस क्षेत्र में निरंतर प्रगति को दर्शाती हैं। भारत सरकार ने 2014–15 से "स्वदेश दर्शन" और "प्रसाद" जैसी योजनाएं शुरू की हैं, जिनके माध्यम से थीमैटिक पर्यटन सर्किट, तीर्थ स्थानों पर सुविधाएं और सतत पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस दिशा में 2023 में स्वदेश दर्शन 2.0 भी शुरू किया गया है जिसने पर्यावरण–संवेदनशील पर्यटन को प्राथमिकता दी है। इसी प्रकार, मध्य प्रदेश में हेली पर्यटन सेवा, ग्रामीण पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए कई पहल की गई हैं, जो स्थानीय संस्कृति और आर्थिक विकास को मजबूत करती हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में संग्रहालयों का विकास और प्राचीन कलाकृतियों की वापसी ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान को बढ़ावा दिया है, जिससे युवाओं में अपनी विरासत के प्रति गर्व जागरुक हो रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर कई विश्व धरोहर स्थल जैसे खजुराहो, सांची स्तूप, भीमबेटका की गुफाएं, और मध्य प्रदेश के अन्य ऐतिहासिक स्थल पर्यटन के प्रमुख केंद्र बन चुके हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य न केवल सांस्कृतिक संरक्षण है, बल्कि यह स्थानीय संसाधनों का सतत विकास और रोजगार सृजन भी सुनिश्चित करता है। सरकार की सांस्कृतिक और पर्यटन नीतियों में विरासत संरक्षण, समुदाय की भागीदारी, बुनियादी ढांचे का विकास, और डिजिटल माध्यमों के उपयोग द्वारा पर्यटन को अधिक समावेशी व टिकाऊ बनाने का लक्ष्य प्रमुख रूप से उभरता है। इस प्रकार मध्य प्रदेश एवं विन्ध्य प्रदे ा में पर्यटन विकास और सांस्कृतिक संरचनाओं का संरक्षण एक समेकित प्रयास है जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति के साथ जुड़ा हुआ है।

BIBLIOGRAPHY

1. Arora K.K - Tourist Industry in Kumayon, Univ. of Agra unpublished P.H.D Anand M.M- Tourism and Hotel industry in India, Prin well Hall of India pvt.ltd. New Delhi.
2. Batra Gossa- Tourism promotion and Development, New Delhi.
3. Bhatia, A.K. (1978) Tourism in India. History and development Sterling publisher New Delhi.
4. Dasman, R.F. (1968) A different king of country, Macmillan, New Delhi.
5. Green Wood, D.J. (1972) Tourism as an Agent of Change. Ethnology, Vol II, Punia, B.K. (1997) Tourism management Problems and Prospects, Ashish Pub. House, New Delhi.
6. Singh, K. (1973) Regional Structure of Bundle Khand unpublished M. Phil Thesis, J.N.U. New Delhi.
7. Singh, K. (1981) Settlement structure and process of Regional, development. A Case study of Bundel Khand, unpublished Ph. D Thesis J.N.U. New Delhi Singh, Kanchan & Singh S.C.- Khajuraho as nuclear of Tourist Economy in Bundelkhand.
8. A.K Bhatia - Tourism Development Principle & Practices
9. Savindra Singh - Environmental Geography (Prayag Pustak Bhawan Allahabad)
10. Devashish Das Gupta - Tourism Marketing
11. Roy. A. Cook - Tourism the Business of Travel (Pearson publication)
12. John R. Walkar - Tourism Concepts and Practices (Pearson publication)